रात्रीक्लास ओमशांति 5.1.1967

लक्ष्मा नारायण को ही परमेश्वर परमेश्वरी कहते हैं।अब पुरुषार्थ कर इन जैसा बनना है।और कोई साधु,महात्मा पास ऐसे गोद में नहीं जावेंगे। यहां तो समझाया जाता है पवित्र रहने की प्रतिज्ञा कर फिर गोद में आओ।ऐसे किसी को गोद में नहीं लेते हैं।12मास पवित्र रहे तब ले सकते हैं।बाबा बहुत स्ट्रिक्ट रहते हैं।पतित दुनियां है तब तो बुलाते हैं कि आकर पावन दुनियां बनाओ।बाबा बहुत पूछते हैं पतित हो या पावन हो?तो विचारें क्या कहें?पहले तो बाबा पूछते हैं।विकारों में ही जाने वाले को पतित कहा जाता है।भ्रष्टाचार से ,विकार से तो सब पैदा होते हैं।वो लोग समझते हैं साधु समाज पवित्र है।तुम समझते हो सारे भ्रष्टाचार से पैदा हुये हैं।ल.ना. का शरीर तो भ्रष्टाचार से पैदा नहीं हुआ है ना।धीरे2 स्थापना (तो) होती (है) तो वृद्धि को तो पाते हैं ना।बच्चों के लिए कोई नई बात नहीं है।यह है शिव ज्ञान यज्ञ।शिवबाबा ज्ञान दे रहेह ँ।सद्गति दाता वो एक है।कृष्ण तो हो नहीं सकते हैं।यह सारी दुनियां पुरानी है।बाप आते ही हैं नई दुनियां की स्थापना करने।तो पुरानी दुनियां का विनाश करना ही पड़े।गाया हुआ भी है शंकर द्वारा विनाश।इन ज्ञान की बातों को तुम्हारे सिवाय कोई और समझ नहीं सकते हैं।यह तो बादशाही स्थापन होती है।यह है भी राजयोग।शास्त्रों में भी तो कुछ दिखाया नहीं हुआ है कि राजयोग सीखने के बाद क्या हुआ।पाण्डव गल मरे,प्रलय हो गई ,फिर क्या?दिखाते हैं 5पाण्डव थे और एक कुत्ता।पहाड़ पर गल मरे।यह भी जीवघात हो गया ना।बच्चों को गुप्त अथाह खु(शी) होनी चाहिए।अभी है ब्रह्मा की रात।फिर ब्रह्मा तो दिन नहीं बनावेंगे।भगवान को आना पड़ता है।ब्रह्मा का दिन अर्थात् ब्राह्मणों का दिन बनाने।अभी तुम हो संगमयुग पर।तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए।एक ही बाप ,टीचर, सतगुरू है।यह भी त्रिमूति हो गये ना।वैसे भी त्रिमूर्ति कहते हैं।क्यों ब्रह्मा द्वारा ..... करते हैं।यह भी बातें नहीं समझते हैं।कल्प पहले मुआफिक ड्रामाप्लानअनुसार।इसमें सावधानी भी बड़ी चाहिए।एक बार विकर्म हुआ तो पद भ्रष्ट हो जावेगा।पाप हो जावे तो झट बता कर क्षमा मांग लेनी चाहिए।छुपाने से और ही गिरेंगे।विकर्म हो जावे तो बताओ।इस जन्म के किये हुये भी पाप बताओ।फिर सतोप्रधान बनने लिए बिल्कुल सहज है याद।इसमें माथा आदि भी टेकना नहीं है।शिव2 कहना भी नहीं है।तुम्हारा सब है गुप्त।ओम **6.1.67रात्रीक्लास–** बाबा कहने से रोमांच खड़े हो जाते हैं।स्वीट होम,स्वीट राजधानी याद आती है।बाप से कल्प पहले मुआफिक वर्सा लेते हो तुम राजधानी का।बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावें।घड़ी2 याद करेंगे तो खुशी का पारा चढ़ जावेगा।बाप रचना क्या रचते हैं यह तो मालूम होना चाहिए ना।एक बार निश्चय हुआ कि यह बाबा है तो फिर संशय थोड़े ही हो सकता है।यह तो बच्चे जानते हैं यहां पर शरीर की बात नहीं है।उनके पास आत्माओं का एक्युरेट तो ज्ञान है नहीं।यहां तो....बच्चा भी जानता है कि हम आत्माओं का एक बाप है।हम सब ब्रदर्स हैं।हम आत्मायें बाप के साथ रहती हैं।बाप सब बच्चों को वर्सा दे रहे हैं।शिव जयंती मनाते हैं।शिव क्या करते हैं?प्रजापिता ब्रह्मा क्या करते हैं?प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिव परमात्मा सभी आत्माओं को वर्सा देते हैं।प्रजापिता ब्रह्मा पास कोई प्रापर्टी नहीं है।यह धणी की प्रापर्टी है।उनको भी बाप से वर्सा मिलता है।बेगर टू प्रिंस बनने हैं।मुख से भी कहते भी हैं कि सब कुछ ईश्वर ने दिया है।शिवबाबा तो दाता है।सिर्फ युक्ति बताते हैं कि ममत्व ना रहे।बाप कहते हैं जो कुछ भी है उसका ट्रस्टी होकर रहो।पाप आत्मा को दान नहीं करो जो कि तुमको (भी) पाप लग जावे।दान दिया और उस आदमी ने कोई खराब काम किया तो दान देने वाले पर भी दोष आ जावेगा।अभी हम दान देते हैं बाप को।इसका एवजा विश्व की बादशाही मिलती है।मैं भी व्यापारी हूँ ना।यह व्यापार है।विरला ही कोई यह व्यापार करे।जो करते हैं वो पूरा वर्सा लेते हैं।मम्मा ने व्यापार किया ना।मम्मा बिल्कुल गरीब कुमारी और कितना उंचा वर्सा पाया।कुमारी पर कुछ लगता नहीं है।वो फ्री है।मां ने कुछ भी नहीं लाया और कितना उंचा वर्सा पाया।वारिस भी बनाना है।जो करेंगे सो पावेंगे।आत्मअभिमानी बनने से फिर बच्चों को भी भाई समझेंगे।यह भी आत्मा है।बाप कलियुगी बातों से मुक्त कर सतयुग में ले जाते हैं।सो बच्चों का भी कल्याणकारी बनना है।सदैव बाप को याद करना है।ओम।